श्रेष्ठ कर्मों की सत्ता

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

आपने हरेक मनुष्य को कहीं न कहीं डरते हुए अवश्य देखा होगा। मनुष्य डरता क्यों है, छोटी-छोटी बातों में परेशान क्यों हो जाता है? उसका कारण अगर आप देखेंगे तो ज़रूर मनुष्य को डर सिर्फ एक चीज़ से है वो हैं उसके कर्म। धर्म जो शरीरों के बने उनको अगर हम एक तरफ रख दें तो आज सबको कर्मों का बहुत डर है। क्योंकि कर्म ठीक नहीं हैं इसीलिए शायद आज गंगा के घाटों पर इतनी भीड़ होती है कि अगर हम इसमें चार डुबकी लगा दें तो शायद हमारे कर्म, पाप कर्म नष्ट हो जायें और हम इससे मुक्त हो जायेंगे। लेकिन फिर भी वही पाप कर्म करके पछतावा। तो सोचो एक हमारे पास अथॉरिटी है लेकिन वो कर्म हमारी अथॉरिटी नहीं बन पा रहा है। मतलब हम अथॉरिटी से कर्म नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि न हमको कर्म करने की प्रेरणा कहीं से आती है कि अथॉरिटी वाला कर्म है क्या, कैसे मानें कि ये अथॉरिटी वाला कर्म है! इसके आगे कोई मार्जिन नहीं है, जो भी है सब यही है।

इस बात को सिखाने वाले इस दुनिया में कोई पैदा नहीं हुआ। इसीलिए परमात्मा शिव निराकार ज्योति बिन्दु इस धरती पर आकर हमको श्रेष्ठ कर्म करना सिखाते हैं और श्रेष्ठ कर्म की सत्ता क्या है उसके बारे में बताते हैं। बताया किसके द्वारा? इस धरती के प्रथम मानव प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा कि श्रेष्ठ कर्म क्या होते हैं और कैसे उन कर्मों को देखा जाये,परखा जाये। दुनिया में सबके पास आज पॉलिटिकल पॉवर है, रिलीजियस पॉवर है, और साइंस पॉवर भी है लेकिन इन तीनों पॉवर का इस्तेमाल सही रूप से अगर कोई कर सकता है तो वो है श्रेष्ठ कर्म वाला। क्योंकि जो श्रेष्ठ कर्म वाला है वो धर्म को भी सम्भालेगा मतलब अच्छी धारणायें भी कर लेगा। जो श्रेष्ठ कर्म वाला है वो राज्य कारोबार को भी अच्छे से चला लेगा। क्योंकि राज्य को चलाने के लिए हमको अच्छी सोच और अच्छे संकल्पों की ज़रूरत है।

आत्मा अगर अपनी इन्द्रियों का राजा बन जाये। सबसे पहले अपनी ज्ञानेन्द्रियों, अपनी कर्मेन्द्रियों को अपने वश में कर ले तो इस दुनिया के किसी भी व्यक्ति को वश में करना बहुत आसान है। लेकिन हमारे जो कर्म हैं वो सबसे पहले सोच से शुरू होते हैं, मन्सा से। फिर वो वाचा तक आते हैं और फिर कर्मणा तक अन्तिम परिणाम देते हैं। आपको पता ही है जब कोई कर्म हमसे एक बार हो जाता है तो उसका पश्चाताप होता है। शिव बाबा(परमात्मा) एक बात बहुत अच्छी तरह से कहते हैं या सिखाते हैं कि जैसे हम कहते हैं कि हम चाहते नहीं थे लेकिन हमसे हो गया। शिव बाबा कहते हैं कि आपने चाहा है तभी तो हुआ। ऐसा हो ही नहीं सकता कि आप न चाहें और हो जाये! इसलिए श्रेष्ठ कर्म की पहली अथॉरिटी शुरू होती है मन से। हमारे मन में संकल्प कोई दूसरा नहीं डाल रहा है,हम खुद ही डाल रहे हैं। खुद ही उसको वाचा तक लाते हैं और फिर कर्म तक लाते हैं। बिना हमारे मन्सा के वो संकल्प आये वो कर्म हो ही नहीं सकता। और ये बात न मानना भी एक तरह की ज़िद्द है, एक तरह का विकार है। एक तरह से अस्वीकार करने की भावना है। अपने को न स्वीकार करने की दुर्भावना है।

कुछ भी आप कह लें क्योंकि जब तक मनुष्य स्वयं को स्वीकार नहीं करेगा कि मैं यहाँ-यहाँ गलत हूँ तब तक वो अच्छे कर्म कर ही नहीं सकता। परमात्मा कहते हैं कि श्रेष्ठ कर्म की सत्ता अर्थात् कर्म का वर्तमान फल खुशी देगा और शक्ति अनुभव करायेगा। साथ-साथ भविष्य में जो हम कर्म करेंगे उस कर्म का फल जमा होगा, और उसका नशा भी होगा। इसका एक उदाहरण आप देख सकते हैं कि व्यक्ति किसी ऐसे स्थान पर जाता है या व्यक्ति किसी ऐसी परिस्थिति में होता है जो उसको पता है कि ये चीज़ गलत है। साधारण कर्म करना सबको आता है- उठना, बैठना, खाना, पीना, सबकुछ ये कर्म साधारण कर्म हैं। जो कि नौकरी है, धंधा है, बातें हैं सब कर्म साधारण हैं। लेकिन श्रेष्ठ कर्म,श्रेष्ठ सोच से शुरू होता है और वो सोच है कि हम विश्व के मालिक हैं।

हमको विश्व का मालिक बनना है तो हमको सबसे पहले सबके लिए अच्छा सोचना होगा। अब यहाँ सबके लिए अच्छा सोचने का सीधा-सीधा अर्थ है कि मैं भी उसमें शामिल हूँ। क्योंकि सोच मैं रहा हूँ और जब सोच मैं रहा हूँ तो निश्चित रूप से सबसे पहले कल्याण भी मेरा ही होगा! अब देखो भविष्य हमारा बन गया सिर्फ किससे बना? हमारी बड़ी सोच से। वो सोच हमारा श्रेष्ठ कर्म बन गया क्योंकि सोच मैं रहा हूँ। तो जैसे ही हम ऊंची सोच, ऊंचे दायरे में जाते हैं, पूरे विश्व को अपना परिवार मानने लग जाते हैं, सभी के साथ एक जैसी स्थिति होती है तो मेरे कर्मों में दृढ़ता आती है। आप ध्यान से देखो तो श्रेष्ठ कर्म में इतनी गहरी शांति है, इतना गहरा सुकून है कि उस सुकून को लेने के बाद आपको और कुछ मार्जिन रह नहीं जाती।

इस दुनिया की जितनी भी सत्तायें हैं, जितनी भी अथॉरिटीज हैं, उन अथॉरिटीज में भी दम रहा। उसका मात्र एक कारण है कि उन अथॉरिटीज को यूज़ करने वाला मनुष्य ही तो है! लेकिन मनुष्य के कर्म अगर श्रेष्ठ नहीं हैं, विचारों में अगर श्रेष्ठता नहीं है, भावनाओं में अगर श्रेष्ठता नहीं है, सबके लिए भाव अगर शुद्ध नहीं हैं तो वो चीज़ भी उनको सुख नहीं देती है। एक उदाहरण है जैसे घर में बहुत अच्छे-अच्छे उपकरण हैं लेकिन सबके हाथ से वो गिरता रहता है, वो टूटता रहता है कभी कुछ हो जायेगा, कभी कुछ हो जायेगा। तो ये क्यों हो रहा है? क्योंकि हमारे कर्म वायब्रेट करते हैं। अगर मनुष्य पूरी तरह से सत्य नहीं है, श्रेष्ठ नहीं है, मन के भाव अच्छे नहीं है तो वो किसी चीज़ का इस्तेमाल सही तरह से कर भी नहीं सकता। इसलिए श्रेष्ठ कर्म की सत्ता के लिए मार्जिन नहीं है। मार्जिन का मतलब इसके आगे कुछ नहीं है। अगर हमने एक बार श्रेष्ठ कर्म कर दिया तो आपको उसके आगे-पीछे सोचने की ज़रूरत ही नहीं है। वो निश्चित रूप से फल ही देगा लेकिन सिर्फ इतना याद रहे कि मैं निमित्त रूप से ये कर्म कर रहा हूँ। और इस कर्म से सबको सुख मिलना ही है। इसलिए श्रेष्ठ कर्म रूपी जीवन अगर इतना अच्छा न होता तो आज परमात्मा आ करके इतने सालों से हमको ये सब बातें न सिखा रहा होता, इसलिए सारी सत्ताओं का सार श्रेष्ठ कर्म की सत्ता है और श्रेष्ठ कर्म की सत्ता को जिसने एक बार भी अपना लिया वो विश्व का मालिक है ही है। उसके ऊपर कुछ भी नहीं आगे चल सकता।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न : मैं पंजाब से नवजीवन कौर हूँ। मेरी आयु 20 वर्ष है। मैं ये जानना चाहती हूँ कि क्या भूत-प्रेत होते हैं? अगर होते हैं तो क्या वो किसी भी व्यक्ति के शरीर में प्रवेश कर सकते हैं? अगर हाँ तो ये हममें प्रवेश न करें उसके लिए क्या किया जा सकता है? मुझे इन चीज़ों से डर लगता है। कृपया इस पर थोड़ा प्रकाश डालें।

उत्तर : आपको डरने की ज़रूरत नहीं है। आजकल ये देखने में आता है कि बहुत लोग सुसाइड कर रहे हैं। जहाँ-तहाँ एक्सीडेंट हो रहे हैं। कहीं बम फेंक दिए जाते हैं तो लोग मर जाते हैं। ये जो अचानक मृत्यु होती है मनुष्यों की तो इसको अकाले मृत्यु कहते हैं। बॉडीलेस होकर कुछ समय के लिए ये भटकती रहती हैं। इनके पास भी एक सूक्ष्म शरीर होता है जो किसी-किसी को काला दिखाई देता है। अब ये प्यासी होती हैं, भूखी होती हैं, अतृप्त होती हैं तो कहीं भी अपना इफेक्ट कर लेती हैं। रही बात कि क्या वो सबमें प्रवेश कर लेती हैं, ऐसा नहीं होता है। जिनका उनसे कर्मों का हिसाब-किताब होगा या जिन्होंने उनको बहुत सताया हो और उनको वो याद आ जाये तो उनसे बदला लेने के लिए ये आत्मायें उनमें प्रवेश कर जाती हैं। इसलिए हमें इस बात से पूरी तरह निश्चिंत रहना चाहिए कि कहीं वो हममें प्रवेश न कर जाये। ऐसी कोई बात नहीं है। तो दूसरी चीज़ ये कि अगर ये हैं भी, तो क्या होता है पाप कर्म के कारण बहुत आत्मायें पुनर्जन्म नहीं ले पाती हैं। मैंने ऐसे बहुत केस देखें हैं जो बच्चों को रात को कुछ काली-काली छाया दिखती है। उनकी छाती पर बैठ गई, उनको दबा रही है। वो बोल नहीं सकते, वो चिल्ला नहीं सकते तो उनकी मातायें-दादियां मुझे फोन करके पूछती हैं कि क्या करें? बच्चे छोटे हैं तो सोने से पहले 7 बार याद कर लेना कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। ये आत्मायें भटक अवश्य रही हैं लेकिन इसका समाधान है- मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। इनसे हमें डरना नहीं है क्योंकि किसी भी चीज़ से हम डरते हैं तो हम उस चीज़ को जल्दी आकर्षित कर लेते हैं। अगर इनसे डरेंगे तो इनका प्रभाव होने लगेगा। क्योंकि ये चीज़ें अपना स्थान तो ढूंढती हैं ना! कोई कहते हैं पेड़ पर रहती हैं, कोई कहते हैं कहीं रहती है। एक मनुष्य आत्मा की नेचर है कि उसको कोई ठिकाना चाहिए। तो वही संस्कार इनके अन्दर भी रहते हैं। तो ऐसे कई काफी समय से खाली पड़ें स्थानों पर भी ये भय पैदा करती हैं। तो जैसे शमशान हो, या कई जगह ऐसे सन्नाटा होता है, भय का माहौल रहता है। ये प्रैक्टिकल सत्य बातें हैं। किसी पॉवरफुल व्यक्ति को भी अगर कहा जाये कि आप ज़रा शमशान में आधा घंटा बैठकर आओ तो उसको भय लगेगा। जब उसको कोई न निर्भय बनना न सिखाये तो वो भयभीत होगा। तो इसका तरीका ये ही है कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, मेरे साथ तो स्वयं भगवान है इस फीलिंग को ऐसे स्थानों पर दोहरायेंगे तो हमारा डर भी खत्म हो जायेगा और इनके इफेक्ट से मुक्त रहेंगे। हमें बाबा ने मास्टर मुक्तिदाता का वरदान दिया है तो हम इन्हें गुड वायब्रेशन देकर इनकी मदद करें, इन्हें मुक्त करें। यानी हम इनके गुड फ्रेंड बन जायें। न हम इनसे डरेंगे और न कोई निगेटिव फीलिंग हम इनके लिए रखेंगे। और ये भी हमें कोई कष्ट नहीं पहुंचायेंगी। और अगर हम पॉवरफुल फीलिंग में रहते हैं तो ये आत्मायें हमारे पास आती ही नहीं हैं।

प्रश्न : मेरा बारह साल का बेटा है। उसे डिस्लेक्सिक प्रॉब्लम है। और इसमें वो पढ़ने में अपने को असमर्थ महसूस करता है। मैं और मेरा बेटा इसपर बहुत ज़्यादा वर्क कर रहे हैं। लेकिन जितनी सफलता मिलनी चाहिए उतनी सफलता मिल नहीं रही है। क्या राजयोग मेडिटेशन इसमें मदद कर सकता है? वो मेडिटेशन तो करता है लेकिन तब जब मैं उस पर चिल्लाती हूँ। किस प्रकार से इस समस्या का समाधान किया जा सकता है?

उत्तर : ये जानना बहुत ज़रूरी है कि राजयोग को कराने के लिए चिल्लाने की ज़रूरत नहीं है। बहुत प्यार से आप उसे मोटिवेट करें। इसमें बच्चे को योग करने के अलावा आप 21 दिन इनके लिए एक घंटा रोज़ योग करें। ये जो कुछ भी मनुष्य के साथ हो रहा है वो उसके पूर्व जन्मों के किसी न किसी कार्मिक अकाउंट का परिणाम होता है। यदि उसको हम क्लीन कर दें तो कई चीज़ें ठीक होने लगेंगी। इसलिए अपने बच्चे के लिए आपको संकल्प करना है कि मेरा ये योगाभ्यास इस आत्मा के लिए है। रोज़ एक घंटा टाइम फिक्स करके अभ्यास करेंगी। और इससे पहले दो स्वमान याद करेंगी कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। फिर जस्ट बच्चे की आत्मा को देखेंगी तो वो योग की शक्ति उस बच्चे को चली जायेगी। और आपको ही दो कार्य और करने हैं। एक तो बच्चे को हमेशा ही सात बार पानी पर ये संकल्प करके कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ,पानी चार्ज करके पांच-छह बार बच्चे को रोज़ अवश्य पिलाना है। और दूसरा आपको उनके ब्रेन को एनर्जी देनी होगी। वैसे भी माँ की एनर्जी को बच्चा बहुत जल्दी रिसीव करता है। जैसा हम हमेशा बताते हैं दोनों हाथों को मलते हुए तीन बार याद करेंगी मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। हाथों में एनर्जी आ जायेगी। फिर ये दोनों हाथ एक मिनट तक बच्चे के ब्रेन पर दोनों तरफ रख दें। बच्चा आंखें बंद कर लें। और आप संकल्प करें और बच्चा भी संकल्प करे कि ब्रेन परफेक्ट हो जाये। और ऐसा 10 मिनट सवेरे और 10 मिनट शाम को करें। तो ये 10-10 मिनट देने से ब्रेन क्योंकि सबकुछ कंट्रोल तो ब्रेन कर रहा है तो ब्रेन में जहाँ भी कुछ गड़बड़ है, जो किसी की पकड़ में नहीं आ सकती तो इससे वो ऑटोमेटिकली ठीक होने लगेगी। और ये काम आपको 21 दिन तक करना है। तो ये तीन प्रयोग अगर आप सच्चे दिल से और विश्वास के साथ करेंगी तो बच्चे को भी डांट के नहीं, बहुत प्यार से कॉन्फिडेंस में लेकर करेंगी तो वो भी कॉपरेट करेगा कि हाँ मेडिटेशन का तरीका सही है। मैं इससे बिल्कुल ठीक हो जाऊंगा। तो बहुत गहरा इफेक्ट पड़ेगा। तो पूरे विश्वास के साथ 21 दिन तक ये तीनों काम करने हैं।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की ख़ुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल